श्रीमद् आचार्य नेमिचन्द्र
सिद्धान्तचक्रवर्ति विरचित

लब्धिसार

प्रथमोपशम सम्यक्त्व अधिकार

Presentation Developed By: Smt Sarika Vikas Chhabra

अपकर्षण और उत्कर्षण

णिक्खेवमदित्थावणमवरं समऊणआवलितिभागं ।
तेणूणावलिमेत्तं, विदियावलियादिमणिसेगे ॥56॥

- अन्वयार्थ:- (विदियावलियादिमणिसेगे) द्वितीयावली के प्रथम निषेक का द्रव्य अपकर्षण करके उदयावली में देता है उसमें (समऊणआवलितिभागं) एक समय कम आवली का त्रिभाग मात्र (अवरं णिक्खेवं) जघन्य निक्षेप है और
- (तेणूणावलिमेत्तं) उस निक्षेप से कम आवलीमात्र (अवरं अदित्थावणं) जघन्य अतिस्थापना है ॥56॥

www.JainKosh.org

अपकर्षण

- स्थिति कम करके ऊपर के निषेकों का द्रव्य नीचे के निषेकों में देना अपकर्षण कहलाता है ।

उत्कर्षण

- स्थिति बढ़ाकर नीचे के निषेकों का द्रव्य ऊपर के निषेकों में देना उत्कर्षण कहलाता है ।

निक्षेपण

- अपकर्षण अथवा उत्कर्षण किये हुये द्रव्य को जिन निषेकों में दिया जाता है, उन निषेकों को निक्षेपणरूप जानना चाहिए ।

अतिस्थापना

- जिन निषेकों में उत्कर्षित अथवा अपकर्षित द्रव्य नहीं दिया जाता है, उन निषेकों को अतिस्थापना कहते हैं ।

उदयावली के द्रव्य का उत्कर्षण या अपकर्षण नहीं हो सकता है ।
इसके अनंतर निषेक का अपकर्षण या उत्कर्षण संभव है ।

अव्याघात विषयक अपकर्षण

- स्थितिकांडकघात की अंतिम फालि के पतन को छोड़कर जो अपकर्षण होता है, उसे अव्याघात विषयक अपकर्षण कहते हैं ।

जघन्य निक्षेप

- किसी निषेक का द्रव्य अपकर्षित करके कम से कम जितने निषेकों में दिया जाएगा, वह न्यूनतम निक्षेप जघन्य निक्षेप है ।

जघन्य अतिस्थापना

- किसी निषेक का द्रव्य अपकर्षित करने पर विवक्षित निषेक के नीचे न्यूनतम जितने निषेक छोड़े जाते हैं, वह जघन्य अतिस्थापना है ।

www.JainKosh.org

जघन्य निक्षेप और अतिस्थापना

उदयावली के ऊपर स्थित एक आवली प्रमाण निषेकों का नाम द्वितीयावली है ।

द्वितीयावली के प्रथम निषेक का अपकर्षण करने पर जघन्य निक्षेप और जघन्य अतिस्थापना एक साथ प्राप्त होते हैं ।

जघन्य अतिस्थापना

- $\frac{\text{आवली}-1}{3} \times 2$

जघन्य निक्षेप

- $\frac{\text{आवली}-1}{3} + 1$

www.JainKosh.org

अंक संदृष्टि में –

आवली = 16 माना

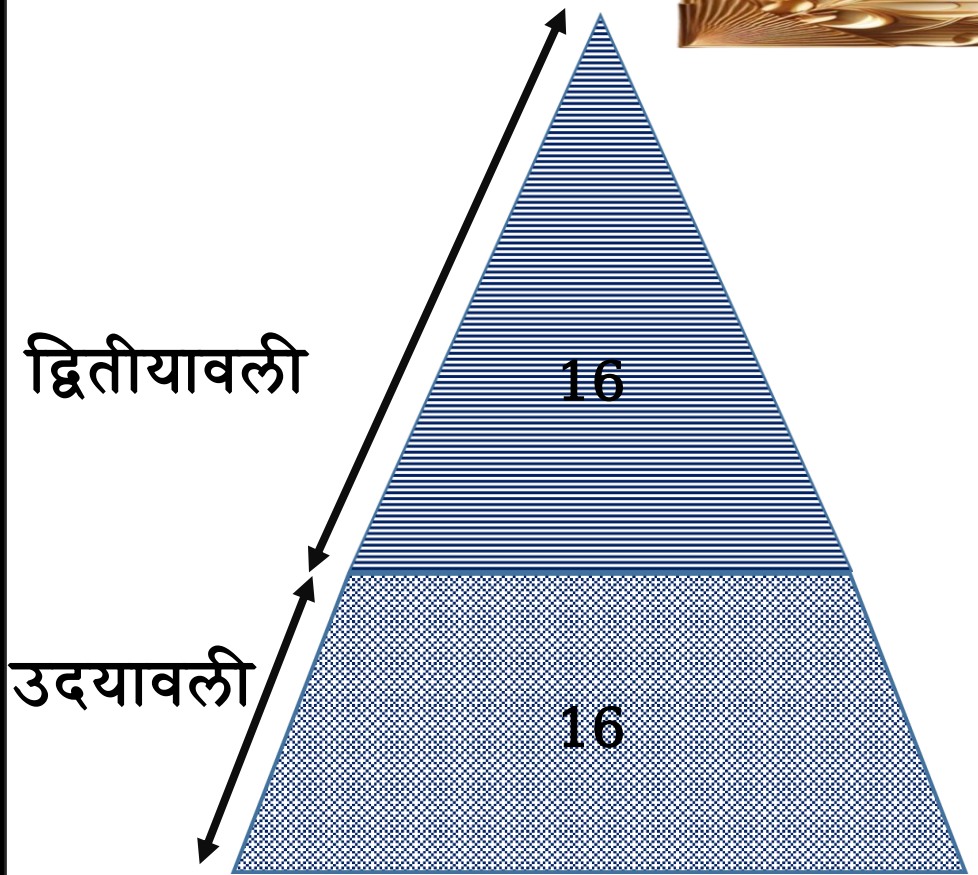

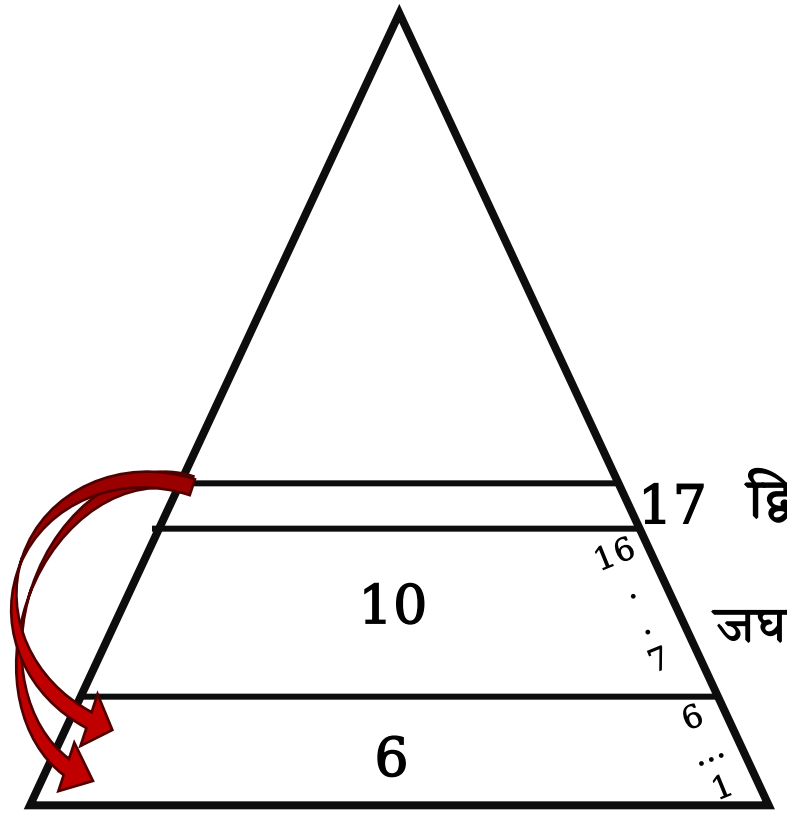

17 द्वितीयावली का प्रथम निषेक

जघन्य अतिस्थापना = $\frac{\text{आवली}-1}{3} \times 2$

जघन्य निक्षेप = $\frac{\text{आवली}-1}{3} + 1$

यह ही जघन्य अतिस्थापना है ।
इससे हीन अतिस्थापना नहीं होती है ।

www.JainKosh.org

जघन्य निक्षेप =

- $\frac{16-1}{3} + 1 = \frac{15}{3} + 1 = 5 + 1 = 6$

जघन्य अतिस्थापना =

- $\frac{16-1}{3} \times 2 = \frac{15}{3} \times 2 = 5 \times 2 = 10$

द्वितीयावली का प्रथम निषेक याने 17वें समय का निषेक, उसका अपकर्षण करने पर 6 निषेक निक्षेपरूप हैं, 10 निषेक अतिस्थापना रूप हैं ।

एत्तो समऊणावलि-तिभागमेत्तोत्ति तं खु णिक्खेवो । उवरिं आवलिवज्जिय, सगट्ठिदी होदि णिक्खेवो ॥57॥

- अन्वयार्थः- (एत्तो) इसके ऊपर (समऊणावलितिभागमेत्तोत्ति) एक समय कम आवली के त्रिभाग मात्र तक (निषेकों का द्रव्य अपकर्षण करने में) (तं खु) पूर्व में कहा गया एक समय कम आवली का त्रिभागमात्र (णिक्खेवो) निक्षेप है ।
- (उवरिं) उसके ऊपर अर्थात् ऊपर के निषेकों का अपकर्षण करने में (आवलिवज्जिय सगट्ठिदि) आवली से रहित अपनी स्थिति (उस निषेक की स्थिति) (णिक्खेवो) निक्षेप (होदि) होता है ॥57॥

www.JainKosh.org

द्वितीयावली के दूसरे निषेक का अपकर्षण करने पर अतिस्थापना एक समय बढ़ती है, निक्षेप पूर्ववत् ही रहता है ।

तृतीय आदि निषेकों का अपकर्षण होने पर भी अतिस्थापना एक-एक समय से बढ़ती है, निक्षेप पूर्ववत् ही रहता है ।

ऐसा करते हुए $(\frac{\text{आवली}-1}{3})+1$ निषेकों तक निक्षेप पूर्ववत् रहता है ।
अतिस्थापना बढ़कर एक आवली प्रमाण हो जाती है ।

निषेक	अतिस्थापना	प्रमाण	निक्षेप	प्रमाण
17	16 से 7	10	1 से 6	6
18	17 से 7	11	1 से 6	6
19	18 से 7	12	1 से 6	6
20	19 से 7	13	1 से 6	6
21	20 से 7	14	1 से 6	6
22	21 से 7	15	1 से 6	6
23	22 से 7	16	1 से 6	6

द्वितीयावली के $(\frac{\text{आवली}-1}{3}) + 2$ निषेक जाने पर एक आवली प्रमाण अतिस्थापना प्राप्त हो जाती है ।

$$\frac{16-1}{3} + 2 = \frac{15}{3} = 5 + 2 = 7$$

अर्थात् द्वितीयावली के 7वें निषेक का अपकर्षण करने पर एक आवली प्रमाण अतिस्थापना होती है ।

नोट – टीका में एक आवली प्रमाण अतिस्थापना लाने हेतु $(\frac{\text{आवली}-1}{3} + 1)$ निषेक ऊपर गये हैं और यहाँ ऊपर दो अधिक किया है । वहाँ टीका में प्रथम निषेक के बाद कितना आगे जाना है – यह बताया है । इसलिए एक अधिक किया है । यहाँ संपूर्ण द्वितीयावली के कितने निषेक आगे जाना है - यह विवक्षा रखी है। इसलिए दो अधिक किया है ।

अत: दोनों में कोई अंतर नहीं है । 'प्रथम निषेक को छोड़कर और लेकर' — इस विवक्षा भेद से एक अधिक किया है ।

यह एक आवली प्रमाण अतिस्थापना अव्याघात विषयक उत्कृष्ट अतिस्थापना है । इसे अतिस्थापनावली कहते हैं ।

इसके आगे के निषेकों का अपकर्षण होने पर अतिस्थापना तो एक आवली प्रमाण ही रहती है । परंतु निक्षेप बढ़ता जाता है ।

इसके आगे उदय वाली प्रकृतियों का निक्षेप निकालने हेतु सूत्र:

- निक्षेप = निषेक संख्या – एक आवली – 1

उदयरहित प्रकृतियों का निक्षेप =

- निक्षेप = निषेक संख्या – एक आवली (अतिस्थापना) – एक आवली (उदयावली) – 1
- चूंकि उदयरहित प्रकृतियों का द्रव्य उदयावली में नहीं दिया जा सकता । इसलिए उदयावली को घटाया है।

www.JainKosh.org

यथा आगे के निषेकों के अपकर्षण का निक्षेप, अतिस्थापना इस प्रकार होगी -

निषेक	अतिस्थापना	प्रमाण	निक्षेप	प्रमाण
24	23-8	16	1-7	7
25	24-9	16	1-8	8
26	25-10	16	1-9	9
27	26-11	16	1-10	10
28				
29				
30				
31				
32	31-16	16	1-15	15
33	32-17	16	1-16	16

सूत्र अनुसार निषेक 25, 33 आदि का निक्षेप कितना होगा ?

निक्षेप = निषेक संख्या – एक आवली – 1

25 – 16 – 1 = 8

33 – 16 – 1 = 16

जिस निषेक का अपकर्षण होता है, उसके नीचे की एक आवली अतिस्थापना रहती है।

अतिस्थापना के नीचे के निषेकों में निक्षेप होता है।

उक्कस्सट्ठिदिबंधो, समयजुदावलिदुगेण परिहीणो । ओक्कड्डिदम्मि चरिमे, ठिदिम्मि उक्कस्सणिक्खेवो ॥58॥

- अन्वयार्थः- (चरिमे ठिदिम्मि) अंतिम स्थिति के (निषेक के) (ओक्कड्डिदम्मि) अपकर्षण होने पर (समयजुदावलिदुगेण परिहीणो) एक समय अधिक दो आवली से हीन (उक्कस्सट्ठिदिबंधो) उत्कृष्ट स्थितिबन्ध; (उक्कस्सणिक्खेवो) उत्कृष्ट निक्षेप जानना चाहिए ॥58॥

www.JainKosh.org

अव्याघात विषयक उत्कृष्ट निक्षेप

उत्कृष्ट निक्षेप = उत्कृष्ट कर्म स्थिति – 2 आवली – 1

किसी जीव ने उत्कृष्ट स्थिति का बंध किया ।

बंध से एक आवली पर्यंत बद्ध कर्म में कोई उदय, उदीरणा, संक्रमण आदि नहीं हो सकते हैं । यह अचलावली कहलाती है । इसलिए एक आवली तो यह घटाई ।

निषेक के नीचे एक अतिस्थापनावली है जिसमें द्रव्य का निक्षेप नहीं होता है । अत: एक आवली यह घटायी ।

जिस निषेक का अपकर्षण करना है, उसमें भी स्वयं का निक्षेप नहीं होता । अत: एक निषेक घटाया है ।

शेष सर्व स्थितियों में द्रव्य का निक्षेपण होता है । यह अव्याघात विषयक उत्कृष्ट निक्षेप है ।

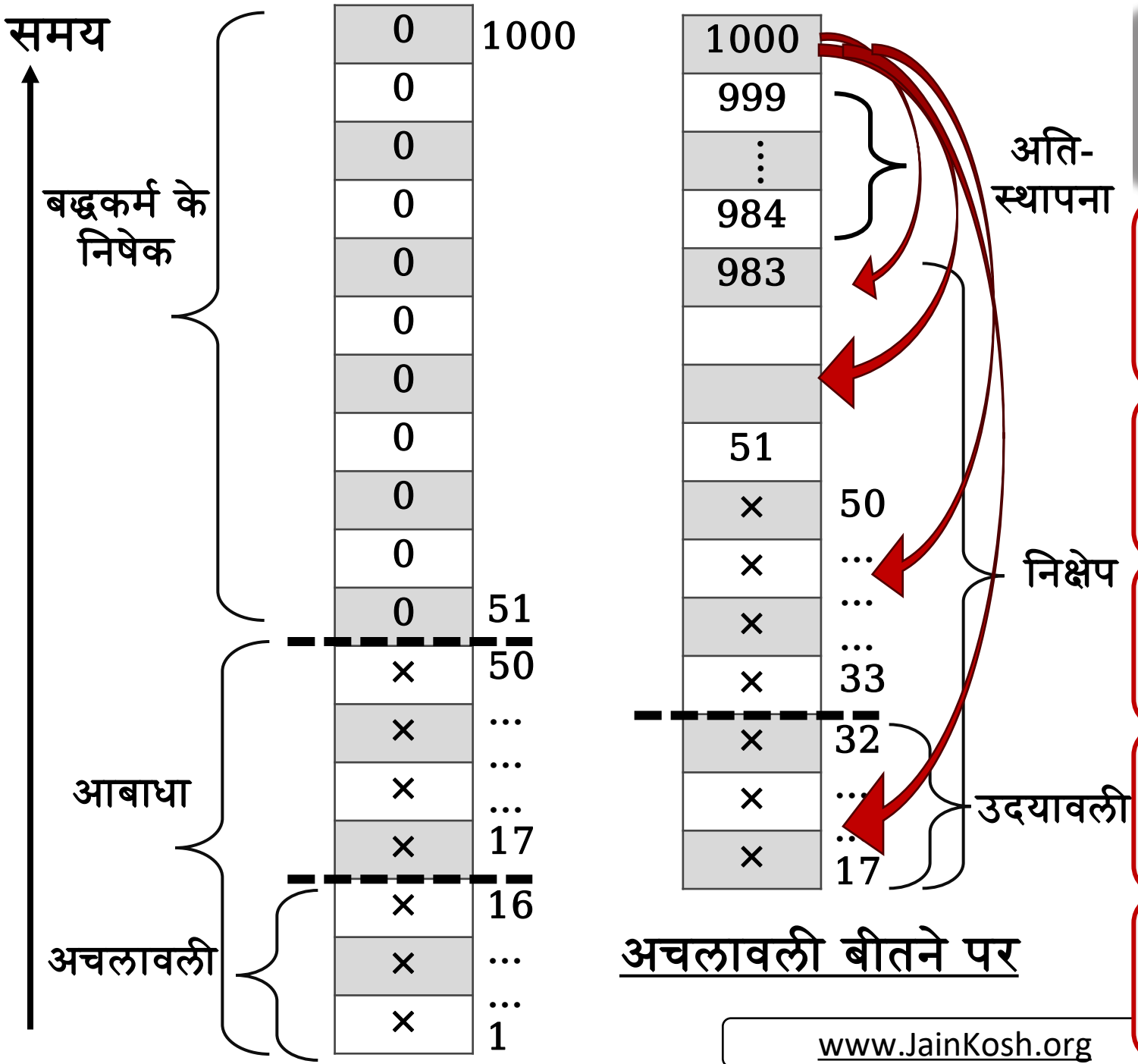

अंक संदृष्टि: अव्याघात विषयक उत्कृष्ट निक्षेप

मानाकि नवीन बद्ध कर्म की उत्कृष्ट स्थिति 1000 समय की है, आबाधा = 50 समय, आवली = 16 समय

बंधने पर आबाधारूप 1-50 निषेकों में कर्म नहीं दिया। 51 से 1000 निषेकों में द्रव्य दिया।

एक अचलावली बीतने पर सबसे अंतिम निषेक का अपकर्षण किया।

तब एक अतिस्थापना को छोड़कर नीचे के शेष निषेकों में निक्षेप करने पर उत्कृष्ट निक्षेप होता है।

आबाधा के निषेकों में भी अपकर्षण के द्वारा द्रव्य दे दिया जाता है।

www.JainKosh.org

अव्याघात विषयक उत्कृष्ट निक्षेप

1000वें समय के निषेक का अपकर्षण करने पर

अतिस्थापना

- 999 से 984 = 1 आवली प्रमाण

निक्षेप

- 983 से 17 = 967

सूत्र द्वारा

- उत्कृष्ट निक्षेप = उत्कृष्ट कर्म स्थिति – 2 आवली – 1

= 1000 – 2 × 16 – 1

= 1000 – 32 – 1 = 967 निक्षेप

www.JainKosh.org

इसके नीचे के निषेकों का अपकर्षण करने पर अतिस्थापना तो आवली प्रमाण ही रहती है । परंतु निक्षेप एक-एक कम हो जाता है । यथा-

निषेक	अतिस्थापना	प्रमाण	निक्षेप	प्रमाण
1000	999-984	16	983-17	967
999	998-983	16	982-17	966
998	997-982	16	981-17	965
997	996-981	16	980-17	964
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
50	49-34	16	33-17	17
49	48-33	16	32-17	16

www.JainKosh.org

अव्याघात विषयक निक्षेप, अतिस्थापना

	निक्षेप	अतिस्थापना
जघन्य	$\frac{\text{आवली} - 1}{3} + 1$	$\frac{\text{आवली} - 1}{3} \times 2$
उत्कृष्ट	कर्म स्थिति – 2 आवली – 1	1 आवली

सभी कर्मों की अपनी-अपनी स्थिति अनुसार उत्कृष्ट अपकर्षण जानना ।

जैसे ज्ञानावरण की उत्कृष्ट स्थिति 30 कोड़ाकोड़ी सागर है ।

तो उसका उत्कृष्ट निक्षेप (30 कोड़ाकोड़ी सागर – 2 आवली – 1) होता है ।

उक्कस्सठिदिं बंधिय, मुहुत्तअंतेण सुज्झमाणेण ।
इगिकंडएण घादे, तम्हि य चरिमस्स फालिस्स ॥59॥
चरिमणिसेयोक्कड्डे, जेट्ठमदित्थावणं इदं होदि ।
समयजुदंतोकोडाकोडिं विणुक्कस्सकम्मठिदी ॥60॥

- अन्वयार्थ:- (उक्कस्सठिदिं बंधिय) उत्कृष्ट स्थिति बांधने के बाद (मुहुत्तअंतेण) अन्तर्मुहूर्त में (सुज्झमाणेण) विशुद्ध हुए जीव के (इगिकंडएण घादे) एक कांडक के द्वारा (अन्त:कोड़ाकोड़ी स्थिति शेष रखकर अवशेष बची स्थिति का) घात करने पर (तम्हि य) उस कांडक की (चरिमस्स फालिस्स) अंतिम फालि के (चरिमणिसेयोक्कड्डे) अंतिम निषेक के अपकर्षण में (समयजुदंतोकोडाकोडिं विणुक्कस्सकम्मठिदि) एक समय अधिक अंत:कोड़ाकोड़ी से रहित उत्कृष्ट कर्मस्थिति (इदं) यह (जेट्ठमदित्थावणं) उत्कृष्ट अतिस्थापना (होदि) होती है ॥59-60॥

www.JainKosh.org

व्याघात विषयक उत्कृष्ट अतिस्थापना, निक्षेप

स्थितिकांडकघात की अंतिम फाली के पतन के समय जो अपकर्षण होता है, उसे व्याघात विषयक अपकर्षण कहते हैं ।

उसकी अपेक्षा अतिस्थापना एक आवली से अधिक होती है । यह अतिस्थापना (उत्कृष्ट कर्मस्थिति – अंत:कोड़ाकोड़ी सागर – 1) प्रमाण होती है ।

कब उत्कृष्ट अतिस्थापना प्राप्त होती है?

1) किसी जीव ने कर्म की उत्कृष्ट स्थिति का बंध किया ।

2) फिर क्षयोपशम लब्धि आदि की विशुद्धि से अंतर्मुहूर्त काल रहा ।

3) तब एक कांडकघात के द्वारा अंत:कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण स्थिति रखकर शेष सबका घात करता है । उस समय अंतिम निषेक की अपेक्षा उत्कृष्ट अतिस्थापना प्राप्त होती है ।

4) यह उत्कृष्ट अतिस्थापना (कर्मस्थिति – अंत:कोड़ाकोड़ी – 1) प्रमाण होती है ।

अंत:कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण निक्षेप है, उसे घटाया । अंतिम निषेक का अपकर्षण किया है, इसलिए 1 घटाया ।

अंत:कोड़ाकोड़ी प्रमाण निक्षेप को छोड़कर अंतिम निषेक के नीचे के सर्व निषेकों में द्रव्य नहीं दिया है । इसलिए वे अतिस्थापना रूप हैं ।

व्याघात विषयक उत्कृष्ट अतिस्थापना, निक्षेप

मानाकि उत्कृष्ट स्थितिबंध = 1000 समय

आवली = 4 समय

कांडक का आयाम = 800 समय

स्थितिकांडकघात का काल = 10 समय

यहाँ 201 से 999 तक के निषेकों में द्रव्य नहीं दिया है । शेष अंत:कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण 14 से 200 निषेक में द्रव्य दिया है । यह उत्कृष्ट अतिस्थापना एवं निक्षेप है ।

1000 – 200 – 1 = 799 अतिस्थापना

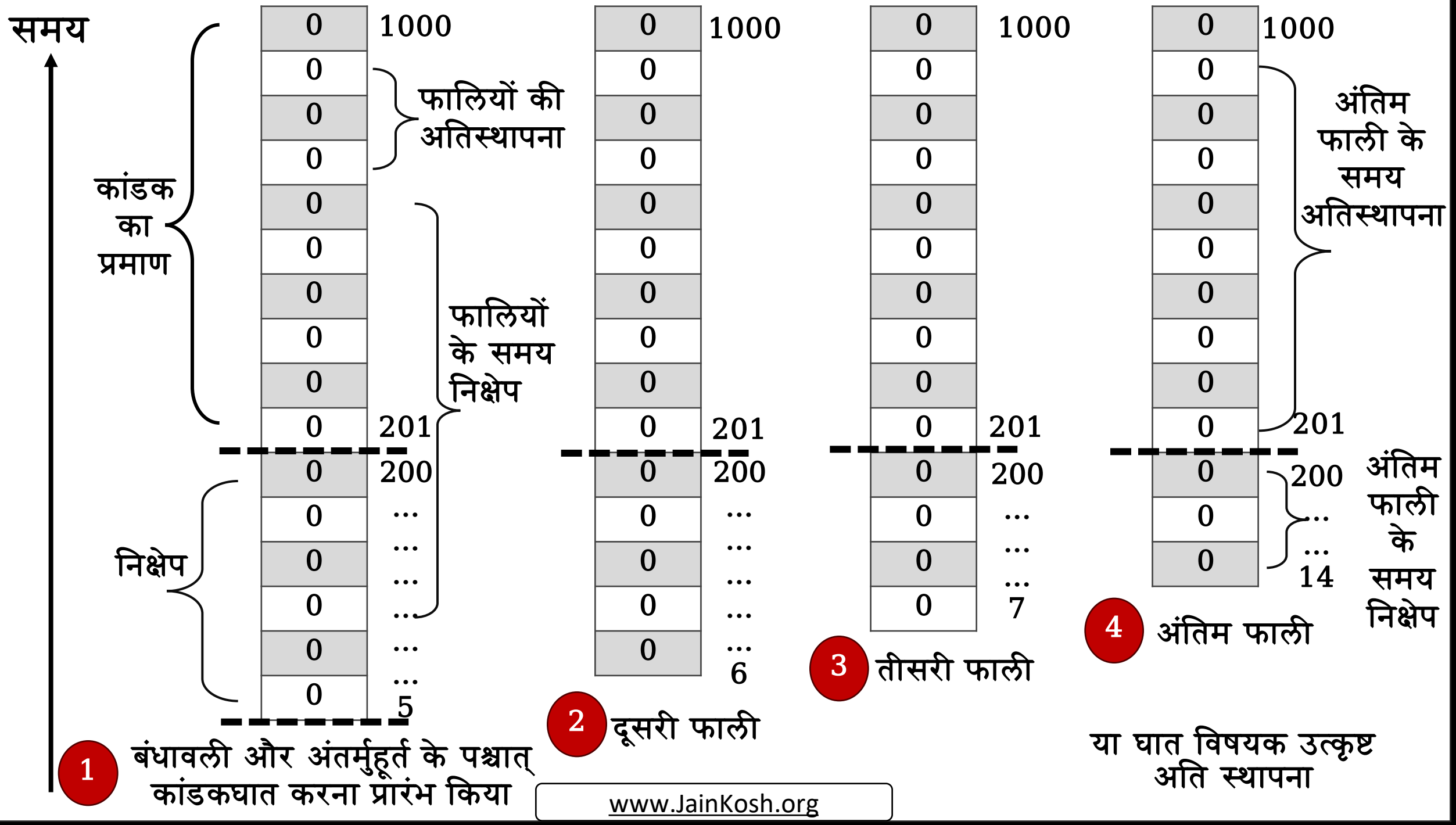

समय
कांडक का प्रमाण
फालियों की अतिस्थापना
फालियों के समय निक्षेप
निक्षेप
0
1000
201
200
...
5
6
7
14
1 बंधावली और अंतर्मुहूर्त के पश्चात् कांडकघात करना प्रारंभ किया
2 दूसरी फाली
3 तीसरी फाली
4 अंतिम फाली
अंतिम फाली के समय अतिस्थापना
अंतिम फाली के समय निक्षेप
या घात विषयक उत्कृष्ट अति स्थापना
www.JainKosh.org

शेष निषेकों की अतिस्थापना, निक्षेप

विशुद्ध होने के काल, स्थितिकांडकघात का काल – ये सब अंत:कोड़ाकोड़ी सागर रूप निक्षेप में से ही समायोजित कर लिये हैं । इसलिए उसे अलग से घटाया नहीं है ।

अंतिम निषेक के नीचे द्विचरम निषेक की अतिस्थापना एक कम होगी, क्योंकि उसकी स्थिति 1 समय कम है । इसका निक्षेप पूर्व प्रमाण ही होगा ।

इसी प्रकार नीचे-नीचे के एक-एक निषेक की अतिस्थापना एक-एक समय कम होती जाएगी ।

ऐसे करते हुए जहाँ अतिस्थापना (आवली + 1) समय प्राप्त हो, वहाँ तक के निषेक की व्याघात विषयक अतिस्थापना है । क्योंकि 1 आवली से अधिक अतिस्थापना है ।

उसके नीचे 1 आवली प्रमाण अतिस्थापना अव्याघात विषयक कहलाती है ।

निषेक	अतिस्थापना	प्रमाण	निक्षेप	प्रमाण
1000	999-201	799	14-200	187
999	998-201	798	14-200	187
998	997-201	797	14-200	187
997	996-201	796	14-200	187
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
206	205-201	5	14-200	187
205	204-201	4	14-200	187

यहाँ 206 निषेक के अपकर्षण तक व्याघात-विषयक अतिस्थापना है । 205 आदि शेष निषेकों के अपकर्षण में अव्याघात-विषयक एक आवली प्रमाण अतिस्थापना है ।

अंतिम 1000वें निषेक की अतिस्थापना उत्कृष्ट अतिस्थापना है ।

206वें निषेक की अतिस्थापना जघन्य अतिस्थापना है।

शेष 999 से 207 निषेकों की अतिस्थापना मध्यम अतिस्थापना है ।

इन सब व्याघात विषयक अतिस्थापना वाले निषेकों (1000 से 205) में निक्षेप का प्रमाण समान (14 से 200) ही है ।

स्थितिकांडक की प्रथम आदि फाली से द्विचरम फाली तक अतिस्थापना एक आवली प्रमाण ही रहती है । क्योंकि अंतिम निषेक के नीचे के निषेकों का अभाव नहीं हुआ है ।

अंतिम फाली के पतन के समय कांडक प्रमाण सर्व निषेकों का अभाव हो रहा है । इसलिए वहाँ द्रव्य देना शक्य नहीं है । अतः वे सब निषेक अतिस्थापनारूप हो जाते हैं ।

जैसा अंक संदृष्टि में कहा है, वैसे ही वास्तविक स्थितिबंध में भी समझना ।

www.JainKosh.org

सत्तग्गट्ठिदि बंधे, अदित्थियुक्कड्डणे जहण्णेण । आवलिअसंखभागं, तेत्तियमेत्तेव णिक्खिवदि ॥61॥

- अन्वयार्थ:- (सत्तग्गट्ठिदि) सत्त्व की अग्र (अंतिम) स्थिति का (बंधे) नवीन बंध में (उक्कड्डणे) उत्कर्षण करने पर (जहण्णेण) जघन्यरूप से (आवलिअसंखभागं) आवली का असंख्यातवाँ भागमात्र (अदित्थिय) अतिस्थापना छोड़कर (तेत्तियमेत्तेव) उतनी मात्र स्थितियों में अर्थात् आवली के असंख्यात भागमात्र स्थितियों में ही (णिक्खिवदि) निक्षेपण करता है ॥61॥

www.JainKosh.org

उत्कर्षण

सत्ता में स्थित कर्म की

स्थिति और अनुभाग बढ़ाने को

उत्कर्षण कहते हैं ।

यहाँ पर स्थिति का उत्कर्षण किस प्रकार होता है – उसका वर्णन किया है ।

जैसे अपकर्षण में विवक्षित निषेक के परमाणु नीचे अतिस्थापनावली छोड़कर नीचे के शेष निषेकों में दिये जाते हैं,

वैसे उत्कर्षण में विवक्षित निषेक के परमाणु ऊपर अतिस्थापना छोड़कर ऊपर के यथायोग्य निषेकों में दिये जाते हैं ।

उत्कर्षण के सामान्य नियम

उत्कर्षण बंध के समय ही होता है । अर्थात् जब जिस कर्म का बंध हो रहा हो तभी उस कर्म के सत्ता में स्थित कर्म परमाणुओं का उत्कर्षण हो सकता है।

उदयावली के कर्म परमाणुओं का उत्कर्षण नहीं होता है।

व्याघात विषयक उत्कर्षण

जहाँ सत्त्व के अंतिम निषेक से

(आवली + $\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}}$) से कम बंध होने के कारण

अंतिम निषेक की अतिस्थापना एक आवली से कम पायी जाती है,

उसे व्याघात विषयक उत्कर्षण कहते हैं ।

जघन्य अतिस्थापना	जघन्य निक्षेप
$\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}}$	$\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}}$

www.JainKosh.org

अंक संदृष्टि: व्याघात विषयक उत्कर्षण

माना कि $\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} = 4$, सत्त्व का अंतिम निषेक 50वां, नवीन बंध = 58

पूर्वबद्ध कर्म की बंधावली बीत जाने पर ही उसके निषेकों का उत्कर्षण संभव है । इसलिए बंधन के पश्चात् एक आवली बितायी ।

तब पूर्वबद्ध कर्म का अंतिम निषेक 50वाँ है ।

बंधावली के पश्चात्, पुन: उसी कर्म का बंध हुआ ।

यह नवीन बंध पूर्व सत्त्व के अंतिम 50वें निषेक से कुछ अधिक हुआ । 8 निषेक अधिक होकर बंध 58 निषेक का हुआ ।

यह 8 निषेक एक आवली प्रमाण भी नहीं हैं । परंतु $\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} + \frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}}$ भाग प्रमाण हैं । याने $4 + 4 = 8$ प्रमाण हैं । अत: यहाँ अंतिम निषेक का उत्कर्षण संभव है ।

अंतिम 50वें निषेक का उत्कर्षण होने पर 51 से 54 निषेक अतिस्थापनारूप होते हैं । इनमें उत्कर्षण द्रव्य नहीं दिया जायेगा ।

शेष 55 से 58 तक के निषेक; निक्षेपरूप हैं । इनमें उत्कर्षण का द्रव्य दिया जायेगा ।

यदि नवीन बंध 58 से कम होता, तो अंतिम निषेक का उत्कर्षण करना संभव नहीं होता । क्योंकि जघन्य अतिस्थापना और जघन्य निक्षेप का अभाव है ।

यदि सत्त्व से कम या समान बंध करता है, तो अग्र स्थिति का उत्कर्षण नहीं हो सकता है ।

यदि सत्त्व से नवीन बंध 1, 2, 3 आदि समय अधिक है, तो अग्र स्थिति का उत्कर्षण नहीं हो सकता है ।

यदि सत्त्व से नवीन बंध $\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} + \frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}}$ अधिक है, तब ही अग्र स्थिति के निषेक का उत्कर्षण संभव है ।

www.JainKosh.org

व्याघात विषयक उत्कर्षण

किसी कर्म का नवीन बंध हुआ।

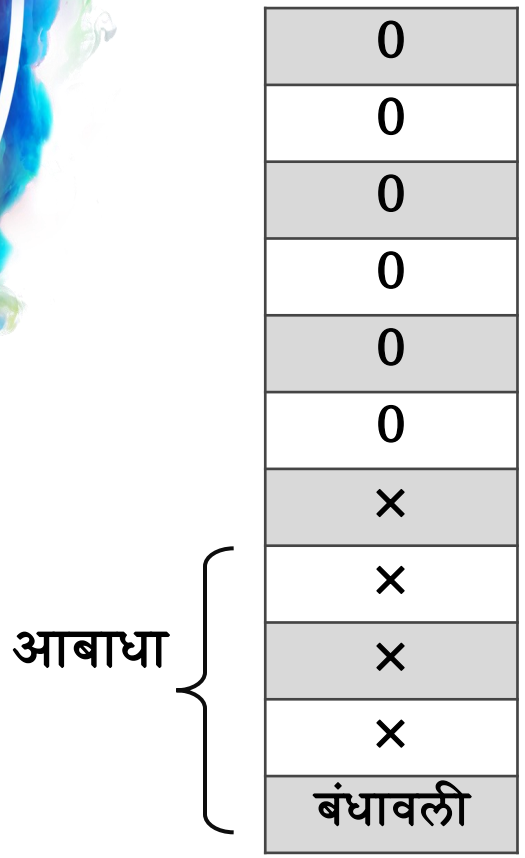

बंधावली बीतने के पश्चात् उत्कर्षण

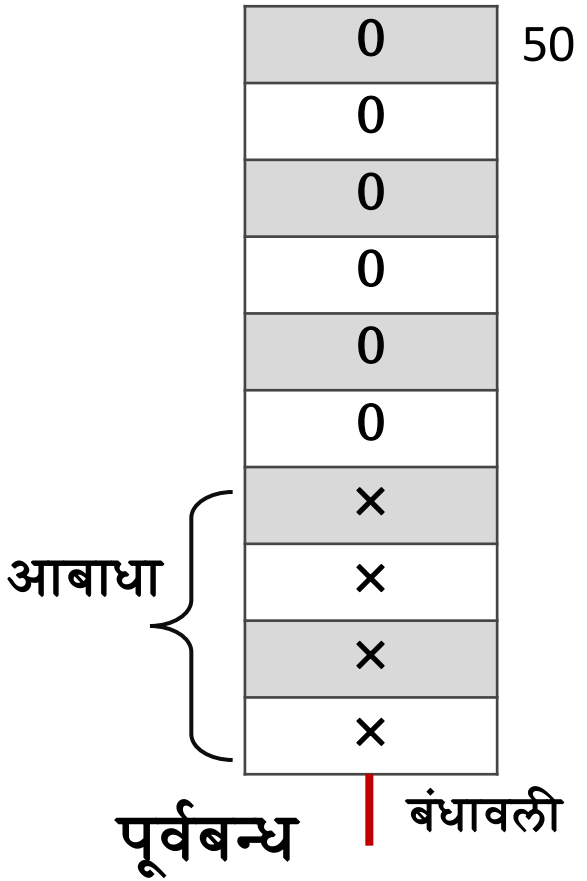

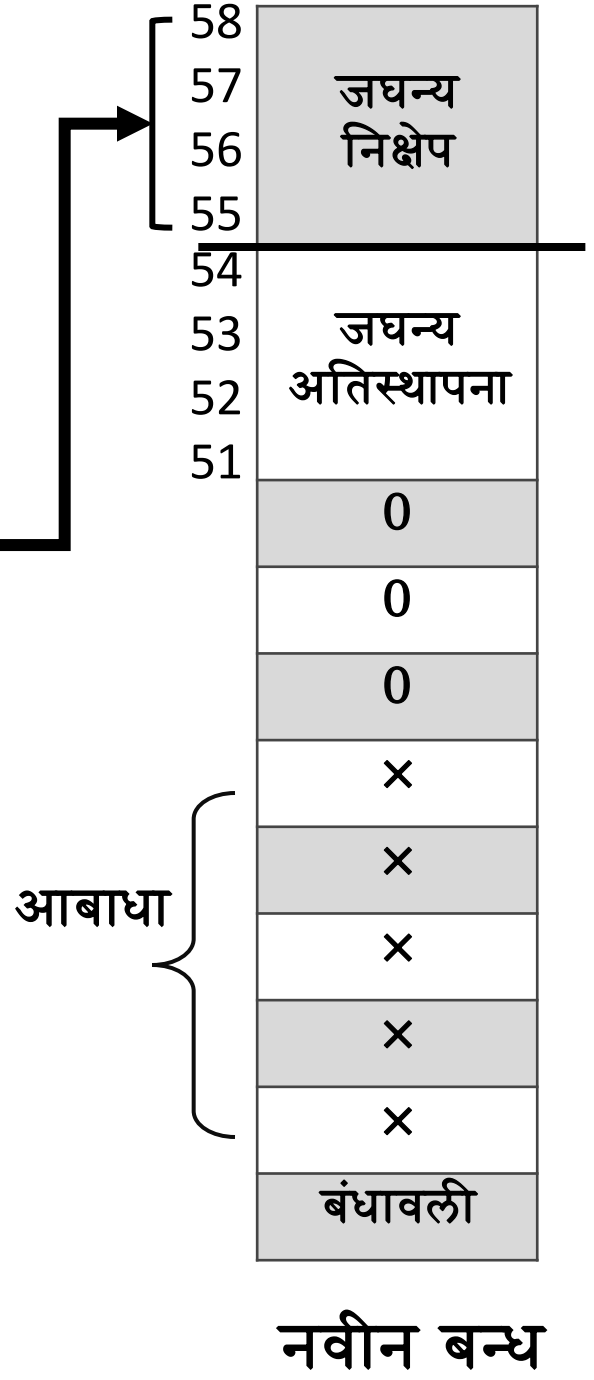

तत्तोदित्थावणगं, वड्ढदि जावावली तदुक्कस्सं ।
उवरीदो णिक्खेओ, वरं तु बंधिय ठिदिं जेट्ठं ॥62॥

- अन्वयार्थः- (तत्तो) उसके अनन्तर (अदित्थावणगं) अतिस्थापना (जावावली) आवलीप्रमाण होने तक (एक-एक समय से) (वड्ढदि) बढ़ती है । (तदुक्कस्सं) वही (आवलीप्रमाण) उत्कृष्ट अतिस्थापना होती है।
- (उवरीदो) उसके अनन्तर (णिक्खेओ) निक्षेप बढ़ता है।
- (वरं तु) उत्कृष्ट निक्षेप इस प्रकार है – (जेट्ठं ठिदिं) उत्कृष्ट स्थिति को (बंधिय) बांधकर... (आगे की गाथा में) ॥62॥

www.JainKosh.org

अव्याघात विषयक उत्कर्षण

$\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}}$ × 2 से अधिक बंध होने पर अतिस्थापना की वृद्धि होती है, निक्षेप पूर्ववत् ही रहता है ।

एक आवली प्रमाण अतिस्थापना हो जाने पर उस उत्कर्षण की 'अव्याघात – विषयक उत्कर्षण' – यह संज्ञा है । इसके पूर्व के निषेकों का उत्कर्षण व्याघात-विषयक उत्कर्षण है ।

www.JainKosh.org

नवीन बंध बढ़ने पर 50वें निषेक की अतिस्थापना एवं निक्षेप इस प्रकार होगा –

नवीन बंध	अतिस्थापना	प्रमाण	निक्षेप	प्रमाण
58	51-54	4	55-58	4
59	51-55	5	56-59	4
60	51-56	6	57-60	4
61	51-57	7	58-61	4
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
69	51-65	15	66-69	4
70	51-66	16	67-70	4
71	51-66	16	67-71	5
72	51-66	16	67-72	6

अव्याघात विषयक उत्कर्षण

किसी कर्म का नवीन बंध हुआ।

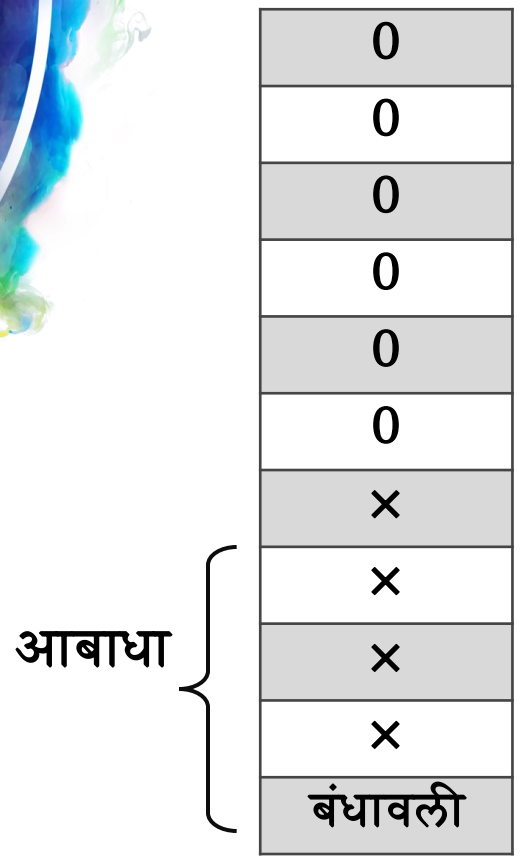

बंधावली बीतने के पश्चात् उत्कर्षण

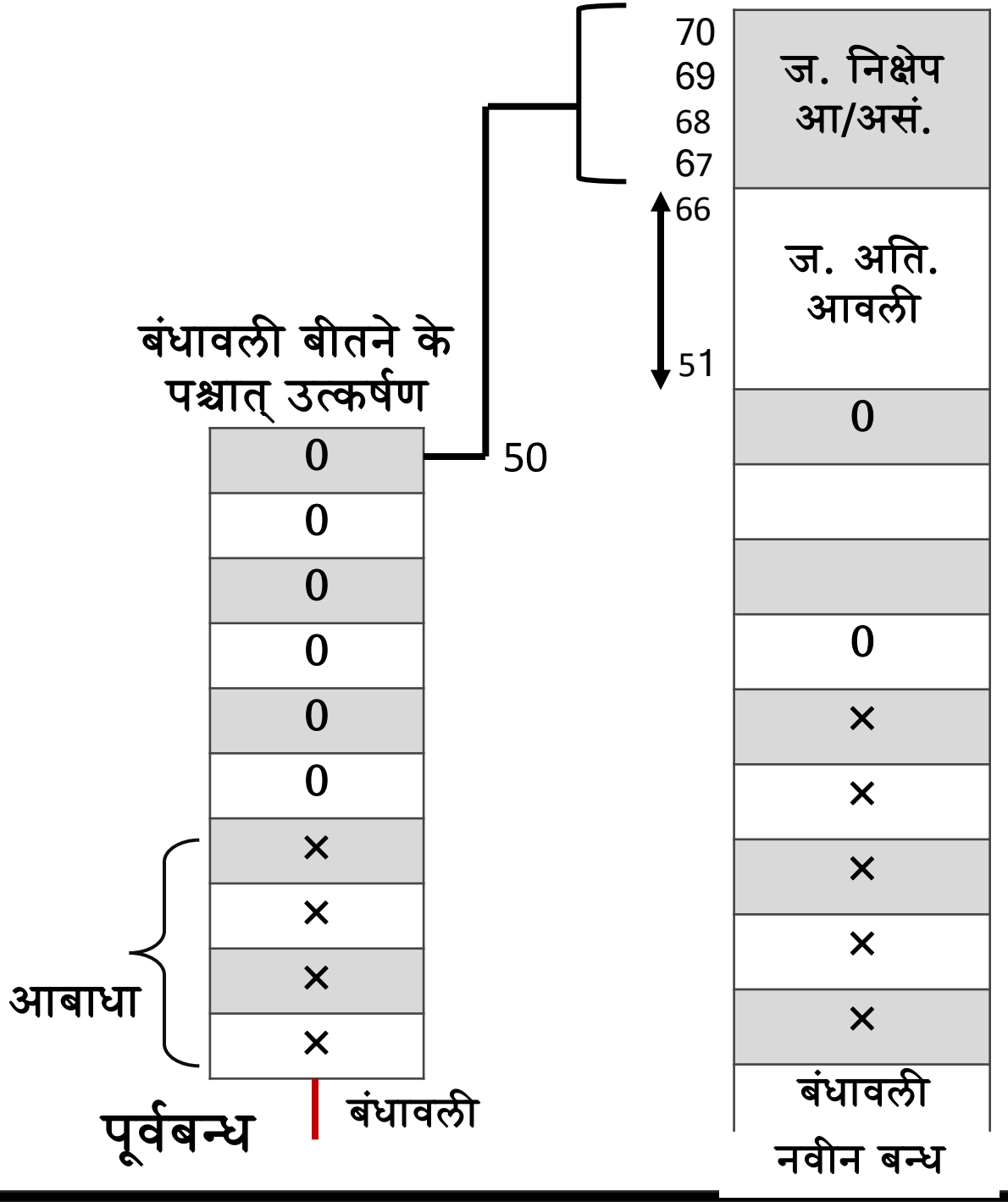

वोलिय बंधावलियं, ओक्कड्डिय उदयदो दु णिक्खविय ।
उवरिमसमये विदियावलिपढमुक्कड्डणे जादे ॥63॥
तक्कालबज्झमाणे, वरट्ठिदीए अदित्थियाबाहं ।
समयजुदावलियाबाहूणो उक्कस्सठिदिबंधो ॥64॥

- अन्वयार्थ:- उत्कृष्ट निक्षेप इस प्रकार है – उत्कृष्ट स्थिति को बांधकर (बंधावलियं) बंधावली (वोलिय) व्यतीत करके (उस उत्कृष्ट स्थिति के अंतिम निषेक के द्रव्य का) (ओक्कड्डिय) अपकर्षण करके (उदयदो दु णिक्खविय) उदय-निषेक से निक्षेपण करके (उवरिम समये) उसके अनन्तर अर्थात् अपकर्षण करने के बाद दूसरे समय में (विदियावलिपढमुक्कड्डणे जादे) द्वितीयावली के प्रथम निषेक का उत्कर्षण होने पर (तक्कालबज्झमाणे) उस काल में बांधी जाने वाली (वरट्ठिदीए) उत्कृष्ट स्थिति में (आबाहं) आबाधाप्रमाण (अदित्थिय) अतिस्थापना करके (समयजुदावलियाबाहूणो) समय अधिक आवली और आबाधा से रहित (उक्कस्सठिदिबंधो) उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण उत्कृष्ट निक्षेप है ॥63-64॥

www.JainKosh.org

उत्कृष्ट निक्षेप

उत्कृष्ट निक्षेप = कर्म स्थिति – (आबाधा + आवली + 1)

यहाँ नवीन बंध की आबाधा प्रमाण अतिस्थापना होती है ।

उत्कृष्ट स्थिति को बांधकर

बंधावली व्यतीत कर

अनंतर समय में अपकर्षण करे।

अनंतर समय में उदयावली के प्रथम निषेक का उत्कर्षण करे।

जिस समय उत्कर्षण कर रहा है, उस समय उसी कर्म की उत्कृष्ट स्थिति का बंध करे ।

तब उस द्वितीयावली के प्रथम निषेक का उत्कर्षण होने पर उत्कृष्ट निक्षेप होता है ।

www.JainKosh.org

दृष्टांत

1) उत्कृष्ट स्थिति बंध = 1000 समय

2) आबाधा = 50 समय

3) आवली = 16 समय

A

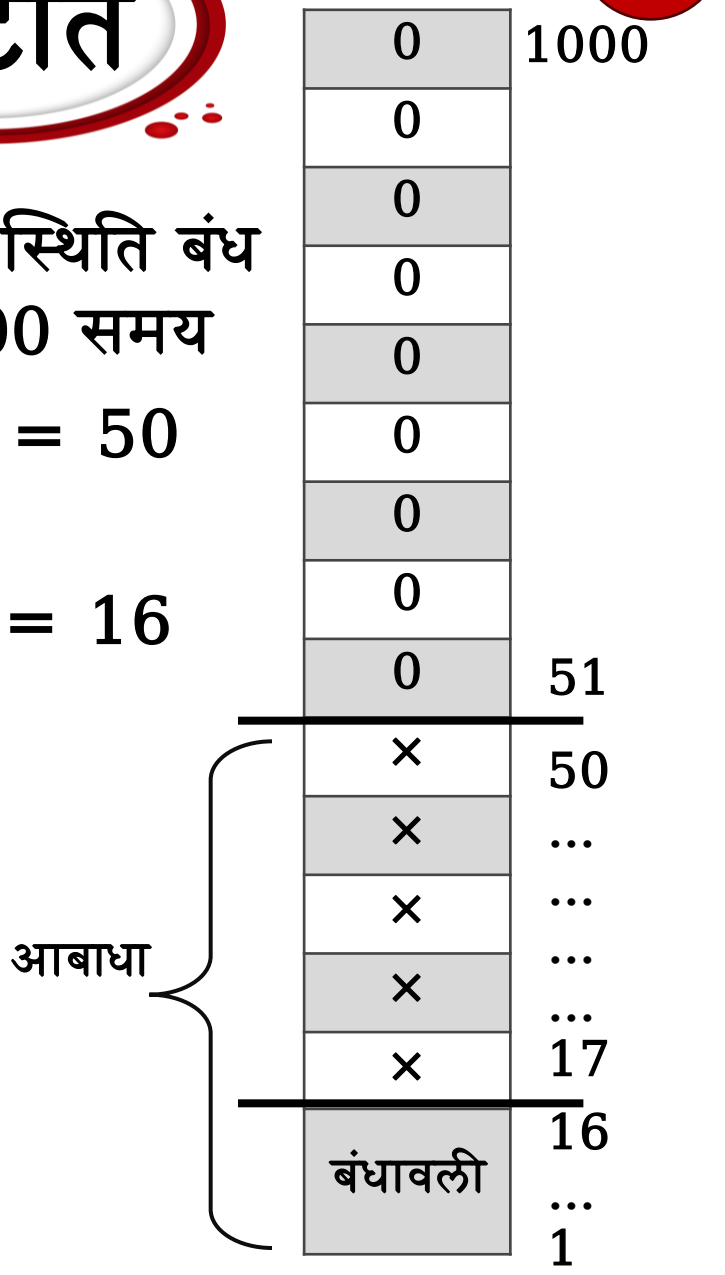

B

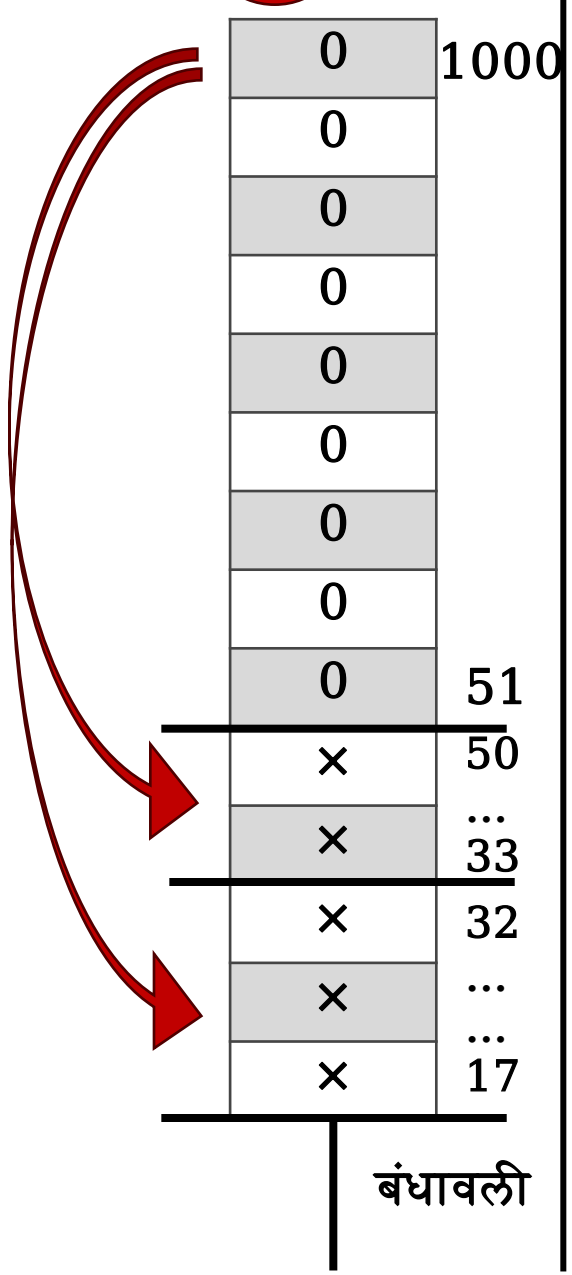

C

बंधावली के पश्चात् 17वें समय में अपकर्षण किया।

इससे आबाधा, उदयावली सब समयों में द्रव्य का निक्षेप किया।

इसके द्वारा आबाधा समाप्त हो गयी । उदीरणा भी हो गयी।

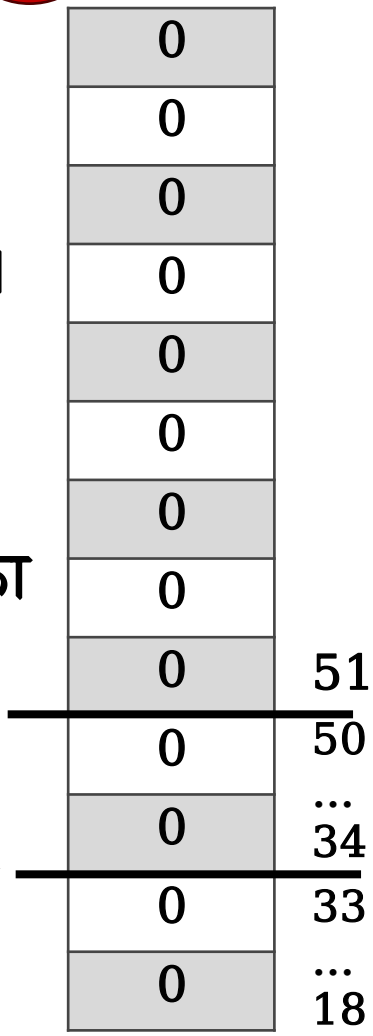

अपकर्षण के अगले समय (18वें) में उत्कृष्ट स्थितिबंध किया एवं उदयावली के बाहर प्रथम निषेक (34वें) का उत्कर्षण किया ।

34वें निषेक का उत्कर्षण करने पर यह नवीन बंध के 51 से 983 निषेकों में उत्कर्षित होगा।

यह निक्षेप =
कर्म स्थिति – (आबाधा + आवली + 1) प्रमाण है।
1000 – (50 + 16 + 1)
1000 – 67 = 933

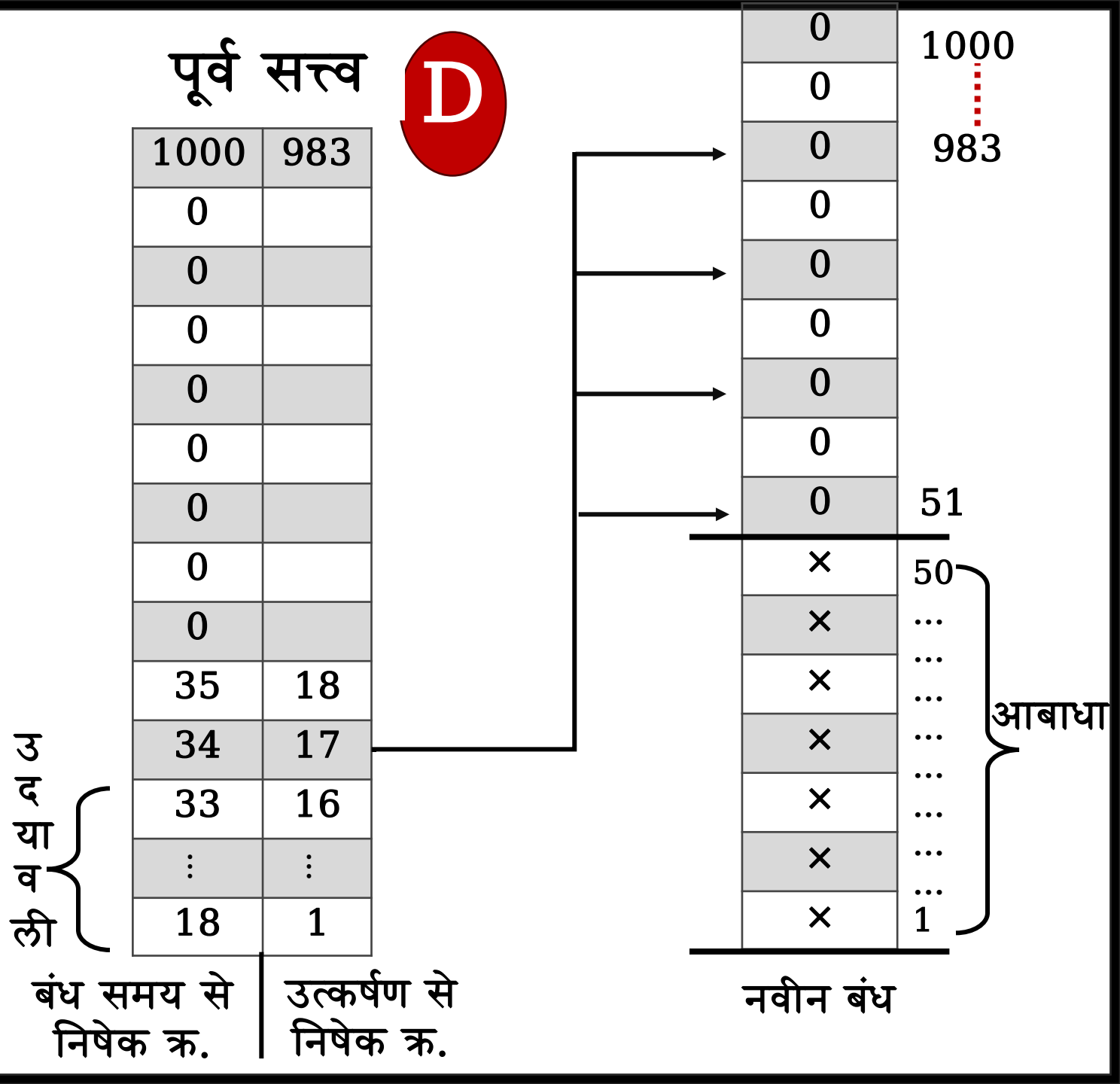

प्रश्न – आबाधा के निषेकों (1-50) में उत्कर्षित द्रव्य क्यों नहीं दिया है ?

उत्तर – बंध होने पर जिन निषेकों की रचना हुई है, उनमें ही उत्कर्षण का द्रव्य दिया जा सकता है ।

नवीन बंध होने पर आबाधा प्रमाण निषेकों में बद्ध द्रव्य दिया ही नहीं है ।

अतः उत्कर्षण का द्रव्य भी वहाँ नहीं दिया जा सकता है ।

इसलिए आबाधा प्रमाण अतिस्थापना रहती है ।

प्रश्न – नवीन बंध के अंतिम निषेक तक उत्कर्षण क्यों नहीं किया है ?

उत्तर – क्योंकि पूर्वबद्ध कर्म की उतनी शक्ति-स्थिति नहीं है ।

शक्ति-स्थिति

शक्ति-स्थिति = कर्म का उत्कृष्ट स्थितिबंध – कर्म निषेक की व्यक्ति-स्थिति

विवक्षित कर्म निषेक का स्थितिबंध सामान्यत: अपनी उत्कृष्ट स्थिति बंध प्रमाण हो सकता है । जैसे मिथ्यात्व के निषेकों का स्थितिबंध प्रत्येक कर्म परमाणु का 70 कोड़ाकोड़ी सागर हो सकता है ।

परंतु प्रत्येक का इतना बंध नहीं होता है क्योंकि निषेक; आबाधा के अनंतर समय से अंतिम समय तक बंट जाते हैं । वहाँ प्रत्येक निषेक का स्थिति बंध अपने-अपने समय तक है ।

जैसे मिथ्यात्व का 70 कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण बंध किया। तो उसकी निषेक रचना इस प्रकार होगी -

यहाँ 7000 वर्ष समय तक आबाधा का प्रमाण है।

उसके पश्चात् प्रथम निषेक के स्थिति बंध का प्रमाण 7000 वर्ष + 1 समय है।

उसके अगले निषेक के स्थिति बंध का प्रमाण 7000 वर्ष + 2 समय है।

इसी प्रकार आगे-आगे 1-1 समय बढ़ता जाता है।

अंतिम निषेक के स्थिति बंध का प्रमाण 70 कोड़ाकोड़ी सागर है।

मिथ्यात्व की निषेक रचना

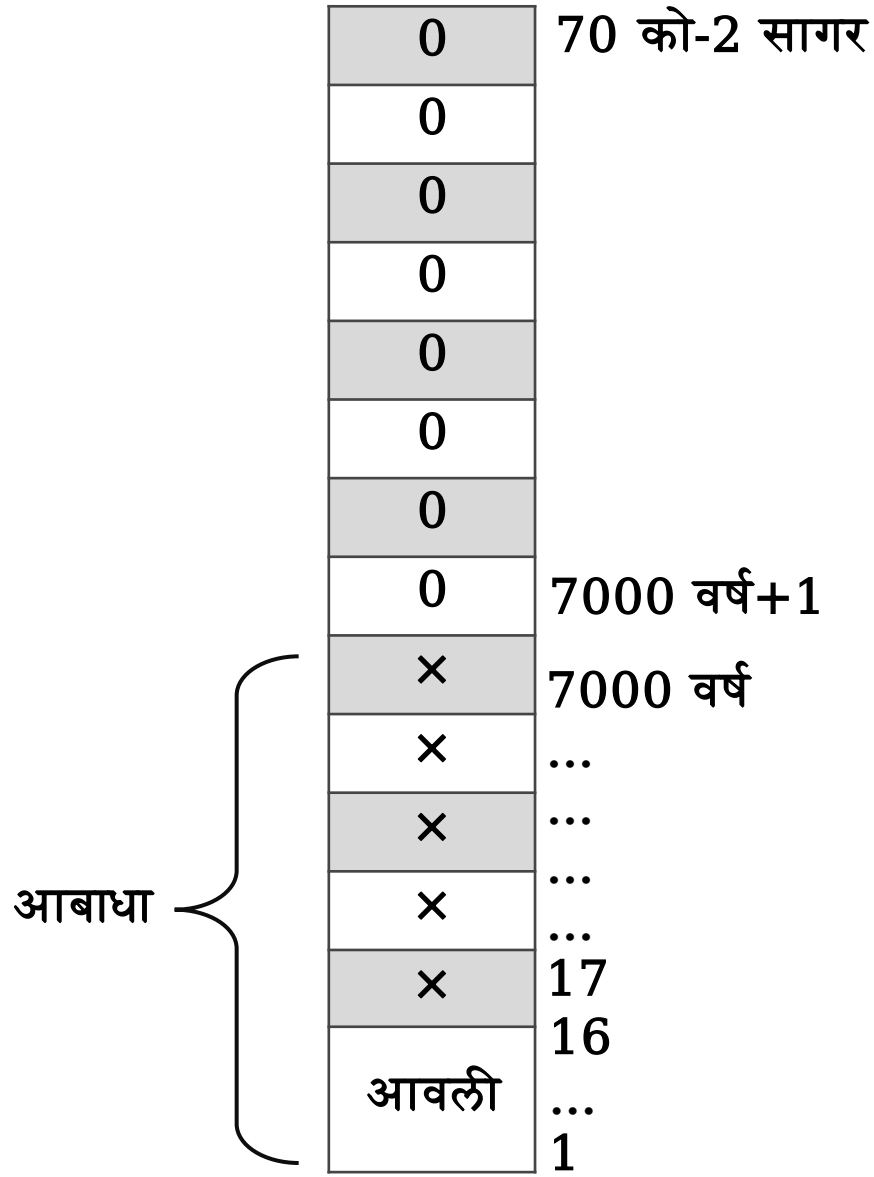

यहाँ जिस निषेक का जितना स्थिति बंध हुआ है, वह उसकी व्यक्ति-स्थिति है ।

इस व्यक्ति-स्थिति को विवक्षित कर्म के उत्कृष्ट स्थिति बंध में से घटाने पर विवक्षित कर्म के निषेक की शक्ति-स्थिति प्राप्त होती है ।

शक्ति-स्थिति प्रमाण विवक्षित निषेक का उत्कर्षण हो सकता है, उससे अधिक नहीं ।

मिथ्यात्व के निषेकों की शक्ति, व्यक्ति-स्थिति

बद्ध निषेक का स्थितिबंध	शक्ति-स्थिति
7000 वर्ष + 1 समय	70 कोड़ाकोड़ी सागर – (7000 वर्ष + 1)
7000 वर्ष + 2 समय	70 कोड़ाकोड़ी सागर – (7000 वर्ष + 2)
7000 वर्ष + 3 समय	70 कोड़ाकोड़ी सागर – (7000 वर्ष + 3)
⋮ ⋮	
70 कोड़ाकोड़ी सागर – 2 समय	2 समय
70 कोड़ाकोड़ी सागर – 1 समय	1 समय
70 कोड़ाकोड़ी सागर	0

प्रश्न – व्यक्ति-स्थिति क्या होती है?

उत्तर – जो कर्म परमाणु बंधे हैं, उनका अपना-अपना जितना स्थिति बंध हुआ है, वह-वह उस कर्म परमाणु की व्यक्ति-स्थिति है ।

जैसे 70 कोड़ाकोड़ी सागर मिथ्यात्व का बंध हुआ । वहाँ अंतिम निषेक की व्यक्ति-स्थिति 70 कोड़ाकोड़ी सागर है । उसके पूर्व के निषेक की व्यक्ति-स्थिति (70 कोड़ाकोड़ी सागर – 1) है । उसके पूर्व निषेक की व्यक्ति-स्थिति (70 कोड़ाकोड़ी सागर – 2) है ।

ऐसे नीचे-नीचे के निषेक की व्यक्ति-स्थिति एक-एक समय कम होती है ।

www.JainKosh.org

प्रश्न – शक्ति और व्यक्ति-स्थिति का उत्कर्षण में क्या प्रयोग है ?

उत्तर – जिस कर्म निषेक का उत्कर्षण हो रहा है, वह उसकी शक्ति-स्थिति तक हो सकता है, उससे अधिक नहीं ।

शक्ति-स्थिति का सिद्धांत यह बताता है कि कोई भी कर्म के परमाणु अपनी शक्ति-स्थिति पर्यंत ही जीव के साथ रह सकते हैं । शक्ति स्थिति के बाहर उनको उत्कर्षित करके जीव के साथ नहीं रखा जा सकता है ।

इससे पता चलता है कि अनादिकालीन कोई कर्म परमाणु किसी जीव के साथ नहीं है ।

प्रश्न – 17वें निषेक का उत्कर्षण करते समय नवीन बंध के 984 से 1000वें निषेक तक द्रव्य क्यों नहीं दिया है?

उत्तर – क्योंकि इस समयप्रबद्ध की एक आवली प्रमाण बंधावली व्यतीत हुई, तो एक आवली कम हुई । एक समय अपकर्षण में दिया था, तो वह एक समय कम किया ।

इस प्रकार एक आवली + एक समय = (16 + 1) = 17 समय प्रमाण अंतिम निषेकों में द्रव्य नहीं दिया है ।

www.JainKosh.org

शेष निषेकों की अतिस्थापना, निक्षेप

उत्कर्षित निषेक	अतिस्थापना	प्रमाण	निक्षेप	प्रमाण
17	18-50	33	51-983	933
18	19-50	32	51-983	933
19	20-50	31	51-983	933
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
33	34-50	17	51-983	933
34	35-50	16	51-983	933
35	36-51	16	52-983	932
36	37-52	16	53-983	931

इस प्रकार आबाधा के नीचे एक आवली प्रमाण निषेकों (34वें) तक उत्कृष्ट निक्षेप प्राप्त होता है, मात्र अतिस्थापना एक-एक समय कम होती जाती है ।

34वें निषेक के ऊपर के निषेकों के उत्कर्षण होने पर अतिस्थापना आवली प्रमाण रहती है, निक्षेप 1-1 घटता जाता है।

ainKosh.org

प्रश्न – उत्कृष्ट अतिस्थापना कितनी होती है ?

उत्तर – उत्कृष्ट अतिस्थापना = उत्कृष्ट आबाधा – (आवली + 1 समय)

यहाँ दृष्टांत में उत्कृष्ट अतिस्थापना = 50 – (16 + 1) = 50 – 17 = 33

पूर्वबद्ध कर्म के 34वें निषेक का उत्कर्षण करने पर उसी समय बद्ध नवीन कर्म के 18 से 50 निषेक अतिस्थापना रूप हैं । यह ही उत्कृष्ट अतिस्थापना है । इसका प्रमाण 33 है ।

वास्तविक गणित में उत्कृष्ट आबाधा = 7000 वर्ष है, तो उत्कृष्ट अतिस्थापना = 7000 वर्ष – (आवली+1) होती है।

अहवावलिगदवरठिदि-पढमणिसेगे वरस्स बंधस्स । विदियणिसेगप्पहुदिसु, णिक्खित्ते जेट्ठणिक्खेओ ॥65॥

- अन्वयार्थ:- (अहवा) अथवा (आवलिगदवरठिदिपढमणिसेगे) आवली व्यतीत होने पर उत्कृष्ट स्थिति के प्रथम निषेक का (बंधस्स वरस्स) बध्यमान उत्कृष्ट स्थिति के (विदियणिसेगप्पहुदिसु) दूसरे आदि निषेकों में (णिक्खित्ते) निक्षेपण करने पर (जेट्ठणिक्खेओ) उत्कृष्ट निक्षेप होता है ॥65॥

www.JainKosh.org

अन्य प्रकार से उत्कृष्ट निक्षेप

किसी जीव ने उत्कृष्ट स्थितिबंध किया ।

बंधावली व्यतीत करी ।

अनंतर समय में आबाधा के ऊपर प्रथम निषेक का उत्कर्षण किया ।

जिस समय उत्कर्षण कर रहा है, तभी विवक्षित कर्म का उत्कृष्ट बंध भी कर रहा है ।

तब नवीन बंध की आबाधा एवं प्रथम निषेक छोड़कर द्वितीय आदि निषेकों में निक्षेपण करता है । तब उत्कृष्ट निक्षेप होता है ।

उत्कृष्ट निक्षेप = कर्म स्थिति – (आबाधा + आवली + 1)

यहाँ अतिस्थापना एक आवली प्रमाण ही है ।

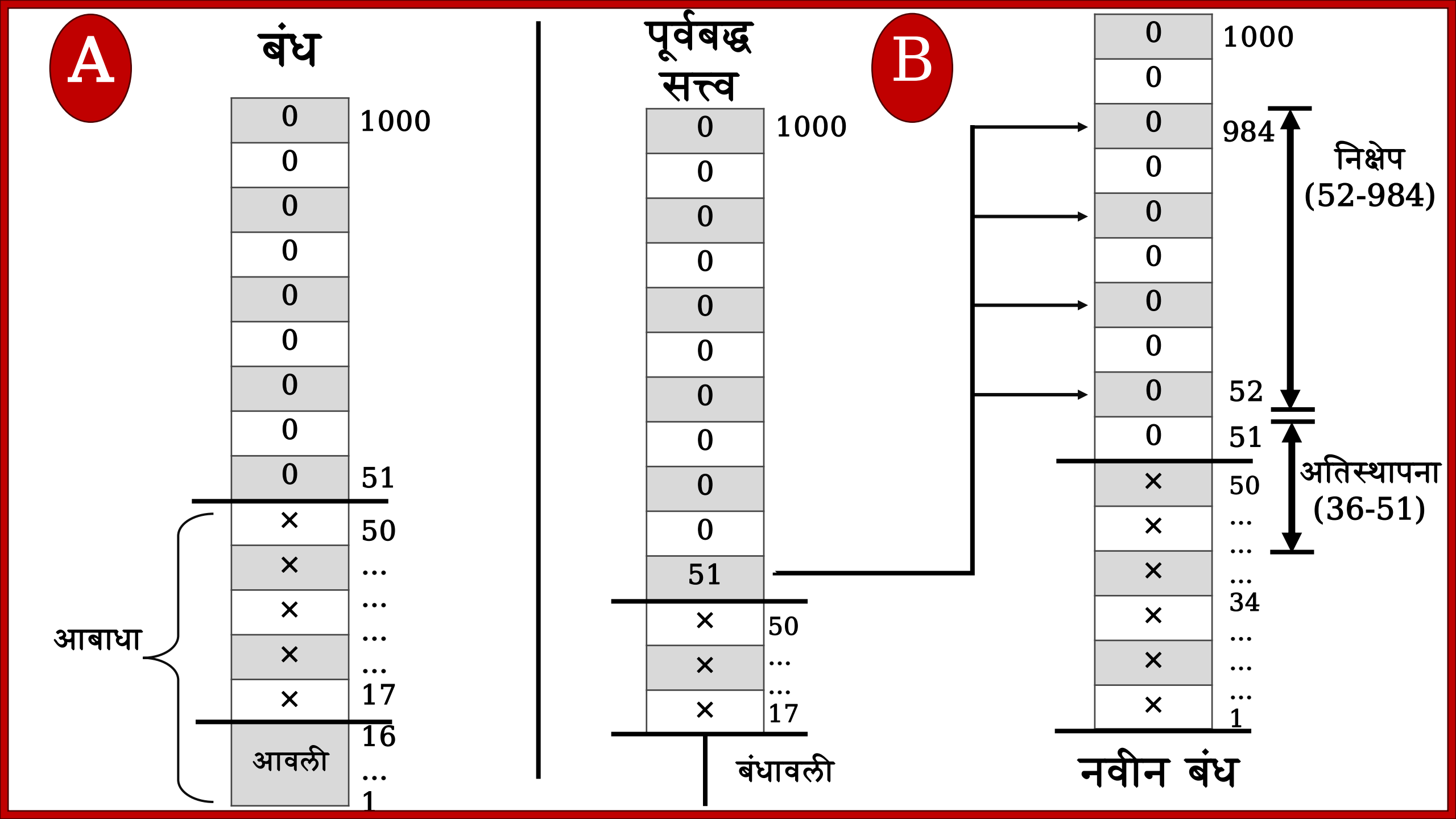

A
बंध
1000
51
50
17
16
1
आबाधा
आवली
पूर्वबद्ध सत्त्व
B
बंधावली
नवीन बंध
984
निक्षेप (52-984)
52
51
अतिस्थापना (36-51)
34

अंक संदृष्टि: उत्कृष्ट निक्षेप

- यहाँ पूर्वबद्ध कर्म के प्रथम निषेक (51वें) का उत्कर्षण किया ।
- वहाँ नवीन बद्ध कर्म के निषेक 36 से 51 तक एक आवली प्रमाण अतिस्थापना हुई ।
- इस अतिस्थापना में 36 से 50 तक (आवली – 1) प्रमाण निषेक तो नवीन आबाधा के ही हैं ।
- 51वाँ निषेक नवीन बद्ध का प्रथम निषेक है । इसमें भी उत्कर्षित कर्म नहीं दिया जायेगा क्योंकि यह अतिस्थापनारूप है ।
- इसके ऊपर 52वें निषेक से नवीन बद्ध के अंतिम एक आवली पूर्व तक (984 तक) उत्कर्षित द्रव्य दिया जाता है ।
- 51वें निषेक का द्रव्य वहाँ तक दिया जाएगा, जहाँ तक इसकी शक्ति-स्थिति है ।
- सो स्वयं 51वाँ निषेक है, जो (आबाधा + 1) प्रमाण है । तथा एक आवली अतिस्थापना की है । इतना समय घटाकर शेष निषेकों में द्रव्य उत्कर्षित होगा ।
- सो 1000 – (51 + 16) = 1000 – 67 = 933
- नवीन बंध के निषेक 52 से 984 तक 933 निषेकों में द्रव्य उत्कर्षित होगा ।

www.JainKosh.org

प्रथम एवं द्वितीय प्रकार में अंतर

प्रथम प्रकार	द्वितीय प्रकार
प्रथम प्रकार में अपकर्षण कराकर, द्वितीयावली के प्रथम निषेक का उत्कर्षण किया है ।	दूसरे प्रकार में बंधावली के पश्चात् आबाधा से आगे प्रथम निषेक का उत्कर्षण किया है ।
इसमें नवीन बंध के प्रथम निषेक में उत्कर्षित द्रव्य दिया है ।	यहाँ नवीन बंध का प्रथम निषेक अतिस्थापनारूप है । द्वितीय आदि निषेक में उत्कर्षित द्रव्य दिया जाता है ।
इसमें नवीन बंध के अंतिम (एक आवली + 1) प्रमाण निषेकों में द्रव्य नहीं दिया जाता ।	इसमें नवीन बंध के अंतिम एक आवली प्रमाण निषेकों में द्रव्य नहीं दिया जाता ।
इसमें उत्कृष्ट निक्षेप अनेक निषेकों का प्राप्त हो जाता है ।	इसमें उत्कृष्ट निक्षेप मात्र एक ही निषेक का प्राप्त होता है ।
इसमें अतिस्थापना के अनेक प्रकार बनते हैं ।	इसमें अतिस्थापना सर्वत्र एक आवली प्रमाण ही बनती है ।

दोनों प्रकारों में उत्कृष्ट निक्षेप का प्रमाण समान ही रहता है ।

यह दोनों प्रकार आगम सम्मत हैं । उत्कृष्ट निक्षेप की विविधता दिखाते हुए ये दो प्रकार बताए हैं । यहाँ कोई अन्य मान्यताएं नहीं हैं ।

शेष निषेकों की अतिस्थापना, निक्षेप

उत्कर्षित निषेक	अतिस्थापना	प्रमाण	निक्षेप	प्रमाण
51	36-51	16	52-984	933
52	37-52	16	53-984	932
53	38-53	16	54-984	931
54	38-54	16	55-984	930

www.JainKosh.org

उक्कस्सट्ठिदिबंधे, आबाहग्गा ससमयमावलियं । ओदरिय णिसेगेसुक्कड्डेसु अवरमावलियं ॥66॥

- अन्वयार्थः- (उक्कस्सट्ठिदिबंधे) उत्कृष्ट स्थितिबंध होने पर (आबाहग्गा ससमयमावलियं) आबाधा के अग्र से एक समय अधिक आवलीप्रमाण निषेक (ओदरिय) नीचे उतर कर (णिसेगेसुक्कड्डेसु) निषेक का उत्कर्षण होने पर (आवलियं) आवलीप्रमाण (अवरं) जघन्य अतिस्थापना होती है । (आबाधागत अतिस्थापनावली छोड़कर ऊपर के निषेकों में निक्षेपण करता है) ॥66॥

www.JainKosh.org

प्रथम प्रकार में जघन्य अतिस्थापना किस निषेक से प्राप्त होती है ?

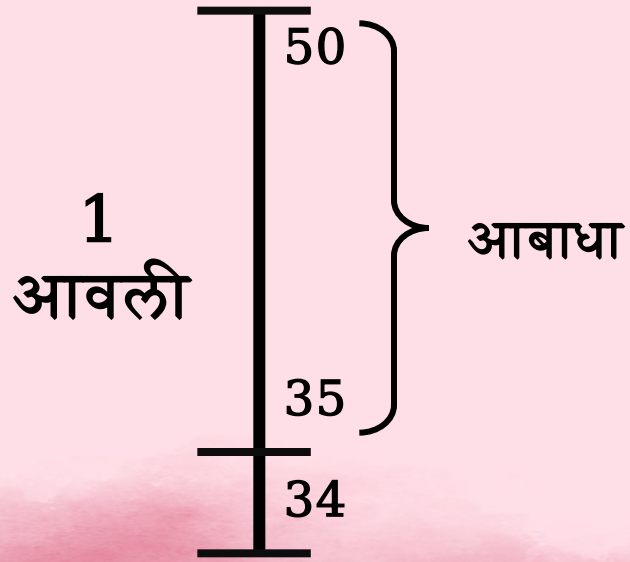

आबाधा के अग्र से (एक आवली + 1) निषेक नीचे उतरने पर प्राप्त निषेक की जघन्य अतिस्थापना एक आवली प्रमाण होती है ।

आबाधा के अग्र 50वें निषेक से एक आवली नीचे 35वाँ निषेक होता है । इसके एक निषेक नीचे 34वाँ प्राप्त होता है।

इस पूर्वबद्ध निषेक का तत्काल बध्यमान में उत्कर्षण करने पर 1 आवली प्रमाण अतिस्थापना होती है । (35-50 निषेक)

ओदरिय तदो विदियावलिपढमुक्कड्डणे वरं हेट्ठा । अइच्छावणमाबाहा, समयजुदावलियपरिहीणा ॥67॥

- अन्वयार्थः- (तदो) उसके अनन्तर (ओदरिय) नीचे-नीचे उतरकर (विदियावलिपढमुक्कड्डणे) द्वितीयावली के प्रथम निषेक का उत्कर्षण करने में (हेट्ठा) नीचे (समयजुदावलियपरिहीणा) एक समय अधिक आवली से रहित (आबाहा) आबाधा; (वरं अइच्छावणं) उत्कृष्ट अतिस्थापना होती है ॥67॥

www.JainKosh.org

उत्कृष्ट अतिस्थापना

पूर्वोक्त (34वें निषेक) निषेक के नीचे के निषेकों का उत्कर्षण करने पर अतिस्थापना एक-एक समय अधिक होती है ।

ऐसा करते हुए उदयावली के ऊपर प्रथम निषेक के उत्कर्षण करने पर उत्कृष्ट अतिस्थापना होती है ।

यह उत्कृष्ट अतिस्थापना; आबाधा – (आवली+1) प्रमाण होती है । (यह सब टेबल में पहले बताया ही है ।)

प्रश्न - आबाधा में से (आवली+1) क्यों कम किया ?

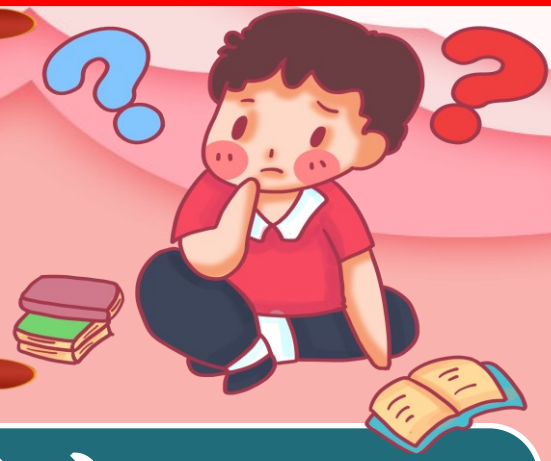

उत्तर – 1) क्योंकि उदयावली के निषेकों का उत्कर्षण नहीं हो सकता, अतः एक आवली घटाई ।

द्वितीयावली के प्रथम निषेक का उत्कर्षण किया है । अतः एक इसे घटाया । क्योंकि इस निषेक के ऊपर के निषेक अतिस्थापना मानते हैं ।

अतः आबाधा में से (आवली+1) घटाया । शेष आबाधा अतिस्थापनारूप रही ।

उत्कर्षण

व्याघात विषयक निक्षेप, अतिस्थापना

	निक्षेप	अतिस्थापना
जघन्य	आवली / असंख्यात	आवली / असंख्यात
उत्कृष्ट	आवली / असंख्यात	आवली – 1

अव्याघात विषयक निक्षेप, अतिस्थापना

	निक्षेप	अतिस्थापना
जघन्य	आवली / असंख्यात	आवली
उत्कृष्ट	कर्मस्थिति – (आबाधा + आवली + 1)	आबाधा – (आवली + 1)

- Reference : श्री लब्धिसार टीकासहित अनुवाद – ब्र. सुजाता रोटे, बाहुबली (वर्तमान में आर्यिका श्री शुद्धोहंश्री माताजी)

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889

- इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं लब्धिसार की प्लेलिस्ट चुनें ।